बालश्रम – एक विश्लेषण

शीला य. भंडारि

सहायक प्रवक्ता हिन्दी विभाग , कर्नाटक कलामहाविद्यालय, धारवाड (कर्नाटक) भारत

सारांश :

हर बच्चा माँ का लाड़ला होता है। परिवार की भविष्य की कल्पनाओं का आधार और समाज देश की बुनियाद होता है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि आज का बचपन कल के समाज के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक यानि समूचे विकास का आधार है। इन्हीं के हाथों देश का विकास एवं उन्नती संभव है। किन्तु जब यही हाथ मजदूरी में लगकर परिवार की आर्थिक उन्नति को बढाने में लग जाते है, तब यह स्थिति परिवार, समाज एवं राष्ट्र के लिए एक बहुत बड़ा प्रश्नचिन्ह बनकर सामने आती है।

प्रस्तावनः

"काम पर क्यों जा रहें है बच्चे ? क्या अंतरिक्ष में गिर गयी है सारी गेंदें क्या दीमक ने खा लिया है। सारी रंग बिरंगी किताबों को क्या काले पहाड़ के नीचे दब गये है सारे खिलौने क्या किसी भूकम्प में ढ़ह गई हैं सारे मदरसों की इमारतें क्या सारे मेंदान, सारे बगिचे और घरों के आँगन खत्म हो गये हैं एकाएक।"

राजेश जोशी की इस कविता में पूछे गये यक्षप्रश्न अनुत्तरित है, लेकिन सरकार सरकारी अंदाज में दावा करती है कि बाल श्रमिकों को चिंहृत करने का काम पूरा कर लिया गया है। सरकारी दावे के अनुसार सिसकते बचपन की गणना हो चुकी है। 1500 डिग्री के तापमान पर खौल रहें पिघलते काँच को ढ़ोने वाले और खतरनाक रासायनिक घोलों में नंगे हाथ डुबो कर ताले के लिए धातु के टुकड़े तैयार करने वाले बच्चों से लेकर जिस्म बेचने को मजबूर बच्चों को आज की नई सुबह का इंतजार है।

"माता शत्रु, पिता बैरी, ये न बालो न पाठितः"

–कौटिल्य

बच्चे, राष्ट्र के भावी नागरिक है और शिक्षा उनके चरित्र और व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का सहज माध्यम, किन्तु आज दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के भावी कर्णधारों की बड़ी संख्या, हाथों में पुस्तकों की जगह हथौड़े लेकर असंगठित रोजगारों के विविध मंत्रालय के समक्ष प्रमुख मुद्दा बच्चों के स्कूल न जाकर आर्थिक कार्य करने का है। क्या ऐसी स्थिति में शिक्षा से सर्वांगीण विकास और सर्वशिक्षा अभियान का लक्ष्य प्राप्त हो सकेगा। "विश्व बन्धुत्व" और दुनिया को "आत्मवत् सर्वभूतेषु" का संदेश देने वाले भारत वर्ष की सार्वजनीन क्षमताओं पर क्या बढ़ते बाल श्रमिक और उनकी दयनीय परिस्थितियाँ प्रश्न चिन्ह नहीं लगाती निश्चित रूप से बाल श्रम समस्यायें आज भारत सहित पूरी दुनिया में चुनौती बन चुकी है।

खेलने, कूदने पढ़ने, लिखने की आवश्यकताओं की तिलांजलि देखर ये बच्चे अपना सम्पूर्ण बचपन, आर्थोपार्जन की अनुचित दशाओं में श्रम की बेदी पर होम कर रहे है। परिवार, व समाज की आवश्यकताओं और शिक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता के बीच बाल श्रमिक के रूप बदहाल बचपन भला मुस्करायेगा कैसे ? समाज के समक्ष आज यही यक्ष प्रशन है जिनका समाज–वैज्ञानिक समाधान जानने के उद्देश्य से यह प्रयास

किया गया है कि बालश्रम और शिक्षा के क्या परस्पर अंतर्सम्बंध है ? शैक्षिक उदासीनता और परिवारिक आर्थिक दबाव के कारण बाल श्रम की समस्या सर्वव्यापी हो गयी है।

बालश्रम के कारण :

बालश्रम एक विश्वव्यापी समस्या है। बालकों का शोषण मानवाधिकार का उल्लंघन है। बालश्रम का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण आर्थिक कमजोरी (गरीबी) है। बालश्रम का दूसरा कारण परिवार का बड़ा होना है। ऐसे परिवार जहाँ सदस्यों की संख्या अधिक होती है वहाँ एक व्यक्ति की आमदनी से परिवार चलाना कठिन होता है। ऐसी स्थिति में बच्चों की आय आजीविका का स्त्रोत बनती हैं। बालश्रम का महत्त्वपूर्ण कारण बालश्रमिकों को सस्ते में उपलब्ध होना भी है। नियोक्ता अल्प मजदूरी में ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। और इसके लिए वे व्यस्क की बजाय बच्चों को श्रमिक के रूप में रखकर मुनाफा बढ़ा लेते हैं। इन उपरोक्त कारणों के निराकरण का प्रयत्न पूरी शक्ति के साथ किया जाना चाहिए । यहाँ तक की बाल मजदूरों की दीन–दशा चित्रित करने वाली चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन भी कर लेते है। परंतु विचार करने योग्य प्रश्न यह है कि हम कितनी ईमानदारी से इनकी दशा को सुधारने का प्रयत्न कर रहे है।

आर्थिक एवं सामाजिक परिपेक्ष्य में बालश्रम के लिए उत्तरदायी परिस्थितियाँ–

1) गरीबी एवं दरिद्रता :– गरीबी एवं दरिद्रता के कारण निर्धन माता–पिता अपने बच्चों को रोजीरोटी कमाने के लिये भेजते है। गरीबी को ही कृषि में बालश्रम का एक प्रमुख कारण माना जाता है। इसके अतिरिक्त माता–पिता को पर्याप्त मजदूरी न मिलने से भी वे बच्चों को काम पर भेजते है।
2) निरक्षरता :– सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि से पिछडे वर्ग व्यापक स्तर पर इस तथ्य की अनदेखी करते है कि बच्चों को शिक्षा दिलाने से उनके व्यवसायिक आर्थिक अवसर नष्ट हो जायेगें।
3) बड़ा परिवार :– परिवार बड़ा होना तथा इसके अनुरूप आय का प्राप्त न होना बाल श्रम का एक महत्त्वपूर्ण कारक है। क्योंकि इन परिस्थितीयों मे परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना मुश्किल होता है।
4) बाल श्रमिकों का सस्ता होना :– औद्योगिकरण एवं आधुनिक वैज्ञानिक तकनीक के कारण नियोक्ता कम खर्च में यथाशीघ्र अधिकाधिक आय प्राप्त करना चाहता है और बेकारी व गरीबी उन्हे सस्ते बाल श्रमिक उपलब्ध कराती है।

इसके अलावा टी. वी. एवं सिनेमा तथा पश्चिमी संस्कृति का खुलापन, बढता हुआ शहरीकरण, जनसंख्या वृध्दि के कारन उचित पालन पोषन होना तथा बढती हुई भौतिकवादिता भी बालश्रम के लिये उत्तरदायी है।

उपसंहार :

इन बालश्रमिकों के हिस्से में 'श' से शोषण तो आया परंतु इनहैं 'स' समानता प्राप्त नहीं हो सकी। 'अ' से अज्ञानता तो हाथ लगी परंतु 'अ' से अनाज और 'आ' से आशा की किरण आज भी इन लाखों बच्चों तक नहीं पहुँच पायी है। इनके मिठे बोल, निर्दोष हंसी, और मासूम बचपन, शायद कहीं खो गये है उदास तथा सूने आँखों से ये हमारी तरफ देख रहे हैं। तो क्या हमें बचपन की नाजुक उँगलियों को थामने का प्रयास ईमानदारीपूर्वक नहीं करना चाहियें ? विचार करने का समय है क्योंकि बचपन कभी लौटता नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कुरूक्षेत्र, मई 2006
2. भारतीय अर्थशास्त्र – डॉ. सक्सेना
3. रिसर्च लिंक – Issue 37 Vol (02) अप्रैल (2007)
4. रिसर्च लिंक – Issue 39 Vol (04) अप्रैल (2007)
5. कुरूक्षेत्र, नवंबर – 2007